“लक्ष्मीकांत वर्मा के प्रमुख उपान्यासों में नारी”

-डॉ. श्रीनिवास मूर्ति. के

विभागाध्यक्ष

हिंदी विभाग

रेवा विश्वविद्यालय,बेंगलूरु|

सार:

वेद नारी को अत्यंत महत्वपूर्ण,गरिमामय, एवं उचित स्थान प्रदान करते हैं| वेदों में स्त्रीयों की सिक्षा-दीक्षा, शील, गुण,कार्य-अधिकार और सामजिक भूमिका का जो सुंदर वर्णन पाया जाता है, वैसा संसार के अन्य किसी भी धर्मग्रन्थ में नहीं है| वेद उन्हें घर की रानी, देश की शासक,पृथ्वी की साम्राज्ञी तक बनने का अधिकार देते हैं| वेदों में स्त्री यज्ञीय है-अर्थात् यज्ञ समान पूजनीय| वेदों में नारी को ज्ञान देनेवाली सुख-संवृद्धि लानेवाली,विशेष तेजवाली,देवी,विदुषी,सरस्वती,इन्द्राणी,उषा(जो सबको जगाती है) ; इत्यादी अनेक आदर सूचक नाम दिए गए हैं| वेदों में स्त्रीयों पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं है| कन्या को अपना पति स्वयं चुनने का अधिकार देकर वेद पुरुष से एक कदम आगे ही रखते है| हिन्दी में भी प्रेमचंद, यशपाल,निराला,अज्ञेय तथा लक्ष्मीकांत वर्मा आदी के उपान्यासों में नारी को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है|

संकेत शब्द:

- नारी चरित्र
- सामजिक चेतना
- निस्वार्थ सेवा भावना
- यथार्थवादी दृष्टिकोण
- जनवादी चेतना

लक्ष्मीकांत वर्मा – नारी चित्रण :

“ अश्वस्य भूषणं वेगो मत्तं स्याद गजभूषणम्।

चातुर्यं भूषणं नार्या उद्योगो नरभूषणम् ||”

(तेज चाल घोड़े का आभूषण है, मत्त चाल हाथी का आभूषण है, चातुर्य नारी का आभूषण है और उद्योग में लगे रहना नर का आभूषण है|)

लक्ष्मीकांत वर्मा के अनुसार, नारी के चरित्र का निर्माण समाज,सांस्कृतिक-मूल्यों,परंपरा,रीति-रिवाज,साहित्य एवं ज्ञान-परम्पराओं तथा धर्म के व्यवहारों के माध्यम से होता है| हमारे यहाँ 'नारी' को बचपन से ही क्षमा,भय,लज्जा,सहनशीलता,आज्ञाकारिता जैसे गुणों को अपना ने की सिक्षा दी जाती है| वर्मा के उपान्यासों में नारी के धार्मिक, राजनीतिक,आर्थिक,और सामजिक अधिकारों की स्थापना का प्रयास किया गया है|

दीप्ति :

'दीप्ति' लक्ष्मीकांत वर्मा का उपन्यास "एक कटी हुई ज़िन्दगी एक कटा हुआ कागज़" का प्रमुख नारी पात्र है| दीप्ति के चरित्र में मानवीय सहानुभूति एवं स्नेह के साथ-साथ सेवा भावना भी विद्यमान है| इसलिए अकेला जीवन व्यतीत करनेवाले अनाम को एकांत की आग में जलने नहीं देती है| कभी-कभी उसके पास आकर यत्किंचित सेवा करती है| वह 'अनाम' की सेवा अपना कर्तव्य मानकर करती है| अनाम की पत्नी 'निशि' के मृत्यु के बाद, दीप्ति अनाम केलिए सबकुछ बन जाती है| निस्वार्थ सेवा भावना उसके चरित्र की एक विशेषता है | हित चिंतन भावना दीप्ति के चरित्र में गोचर होती है| इसलिए वह 'अनाम' के सुख दुख के संबंध में सोचती है और आवश्यक कार्य करती है| 'अनाम' के चरित्र में मद्यपान की आदत दिखाई देती है वह 'अनाम' से कहती है कि शराब पीना बंद करें| दीप्ति के अनुपस्थिति में अनाम शराब पी लेता है| जब शराब नीचे गिरता है तो दीप्ति उस जगह को साफ करती है| अनाम जब मदिरा से बेहोश हो जाता है तब वह देवी के रूप में अनाम की सेवा करती है| दीप्ति हमेशा अपनों की हितचिंतन की भावना रखती है| वह अनाम के पीने की बुरी आदत को उससे दूर करने की कोशिष करती है|

यद्यपि दीप्ति के ह्रदय में अनाम के प्रति कोई शारीरिक आकर्षण नहीं है तथापि वह अपने ह्रदय की सारी सहानुभूति उस पर उंडेल देती है| उसे ज्ञात नहीं कि अनाम के प्रति उसके ह्रदय में अव्याज प्रेम क्यों है? दीप्ति में शारीरिक सौन्दर्य की कमी है मगर मानसिक सौन्दर्य की नहीं| हम अच्छी तरह जानते हैं कि हम में कोई सम्पूर्ण नहीं है तथापि जीवन में हम सम्पूर्णत्व की दिशा में प्रवृत्त होते हैं| दीप्ति जानती है कि अनाम का व्यक्तित्व सम्पूर्ण नहीं है तथापि उसका आकर्षण कम नहीं होता| कभी-कभी वह सोचती है कि वह असम्पूर्ण व्यक्ति के प्रति क्यों आकर्षित है ? आकर्षण का कोई कारण बताया नहीं जा सकता| यह मानवीय प्रेम है|मानवीय प्रेम तुला लेकर नहीं बैठता| यह प्रेम भावना हिमालय की गोद से निकल कर बहने वाली गंगा की तरह बढ़ती जाती है| यह प्रेमभावना संपूर्णत्व के अन्वेषण में चलती है, चाहे वह मिले या न मिले| दीप्ति में ऐसी ही प्रेमभावना उपन्यास के अंत तक द्दग्गोचर होती है|

वीणा :

'वीणा' लक्ष्मीकांत वर्मा के चर्चित उपन्यास "तीसरा प्रसंग" का मुख्य पात्र है| 'वीणा' के चरित्र में मानवीय सेवाभावना गोचर होती है| जब वीणा की माँ जयन्ती बीमार पड़ती है, तब वीणा सदा उसकी सेवा-सुश्रूषा में लगी रहती है| वह सोचती है कि माँ जब सोती है तो कमरा में कोई न कोई हो| माता के प्रति वीणा के ह्रदय में मानवीय सेवाभाव निहित है|

वीणा में सेवाभावना के साथ परोपकार भावना भी दिखाई देती है| एक दिन रात को एक शराबी घर में प्रवेश करता है, तो वीणा घबरा जाती है| बाद में वह सोचती है कि, यह शराबी सुबह ठीक और रात को

बिगड़ते हैं| उस शराबी के प्रति सहानुभूति दिखाकर, आश्रय देती है| वह अपना परिचय दिए बिना, सुबह मेज पर ५००० रुपये माँ(जयन्ती) की इलाज केलिए रखकर चला जाता है| जब पिता की नौकरी चली जाती है, वीणा उनका आत्मबल बढ़ाती है और खुद नौकरी करके विषम आर्थिक संकटों से अपने परिवार को बचाती है| वीणा में सौन्दर्य-भावाना भी विद्यमान है| जब, दीपक (वीणा का मंगेतर) सौन्दर्य को एक उपलब्धि मानता है| सौंदर्य के संपर्क में मनुष्य को स्वाभाविक आनंद प्राप्त होने की बात वीणा से कहता है तब वीणा कहती है- " आँखों से देखा जानेवाला सौन्दर्य अशाश्वत है और मन से देखे जानेवाले सौंदर्य ही शाश्वत है|"

जयंती :

जयंती श्री लक्ष्मीकांत वर्मा के द्वारा लिखित "तीसरा प्रसंग" उपन्यास के प्रमुख पात्र है| जयंती आत्माभिमान रखने वाली है| जब शंकर(पूर्व प्रेमी) कहता है कि संकट के समय वह अवश्य उसकी सहायता करेगा| मगर आत्माभिमानिनी जयंती कहती है कि ऐसा समय कभी नहीं आएगा| उसके आत्माभिमान में जनवादी चेतना विद्यमान है| जयंती चाहती है कि कपूर और उसके संबंध को सामाजिक प्रमाणिकता मिले| कपूर यह कहकर ना करता है कि आजकल ऐसे संबंध चलते हैं| वह चाहता है कि संबंध टूटे पर मानव थके नहीं| वह आगे कहता है कि उसे प्रेम में विश्वास नहीं| शारीरिक संबंध के लिए ही स्त्री-पुरुष मिलते हैं| यदि उसे जयंती नहीं मिलती तो दूसरी स्त्री के साथ वह संबंध जोड़ता है| ऐसी अनैतिकता जयंती पसंद नहीं करती|

जयंती के स्मरण में मानवीय चेतना गोचर होती है| शंकर द्वारा प्रेषित तार से उसे ज्ञात होता है कि अब 'केवल' इस संसार में नहीं है| विगत जीवन की कई बातें उसके स्मृति पटल पर अंकित होती है| विवाह के विलास का स्मरण उसकी स्मृति को सजीव रखता है| जयंती ने शंकर को बंदर की मूर्ति तोहफा के रूप में दिया था| यह सूचित करने के लिए कि अभी शंकर मानव नहीं बना है| ऐसे प्रसंग जनवादी चेतना के यथार्थवादी तत्व को निरूपित करता है| जयंती का मानना है कि हमें विगत विषय के संबंध में अधिक चिंतित नहीं होनी चाहिए| जनवाद के अनुसार मनुष्य को वर्तमान जीवन को सुखी बनाने का प्रयत्न करना चाहिए यह जयंती का भी यही विचार है| 4 साल के बाद 'केवल' जयंती से पूछता है कि शंकर कौन है? केवल के मन में स्थित शंका इस प्रसंग में व्यक्त होती है जो अत्यंत स्वाभाविक है| जयंती कहती है कि मेरी तरह शंकर भी लावारिस था| शंकर के संबंध में सभी बातें बता देती है| यह भी बताती है कि उसके शरीर पर जो दाग है उन्हें शंकर ने बनाया था| यह सुनकर केवल निश्चेष्ट हो जाता है इसमें जनवादी चेतना का कोई आदर्श नहीं है तथापि जनवादी तत्वों का यथार्थवादी बोध विद्यमान है|

दामोदर के विषय में जयंती सहिष्णुता का प्रदर्शन करती है| दामोदर जयंती के मामा का साला है| एक दिन स्नान करने के उपरांत जयंती अपने कमरे में वस्त्र बदल रही थी उस समय अचानक दामोदर कमरे में प्रवेश करता है| जयंती के मामा और मामी के पूछने पर झूठ बोलता है कि स्वयं जयंती ने उसे बुलाया था| यह असत्य है| जयंती तब दामोदर के झूठे व्यवहार को प्रकाश में ला सकती थी पर वह ऐसा नहीं करती| वह सब कुछ सह लेती है उसके मामा उसके इस गुण को पहचान लेता है और कहता है कि वह जयंती पर विश्वास करता है|

जयंती सत्य वचन का पालन करती है जनता में अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के लोग होते हैं सत्य कहना जनवादी चेतना है यह चेतना जयंती में दिखाई देती है| दीपक से स्पष्टता कह देती है कि वीणा 'केवल' की पुत्री नहीं है| वह चाहती है कि विवाह के पहले यह सच्चे दीपक जान ले वासंती को भी जयंती सच बता देती

है कि वीणा केवल की नहीं बल्कि दामोदर की पुत्री है| 'केवल' अपने वाणिज्य में मग्न रहकर केवल रात के समय उस से मिलता था अतः जयंती का मन प्रेम की तलाश में बंद होता है| वह अन्य व्यक्ति से संपर्क साबित करती है| जयंती को वर्मा जी एक स्पष्टवादिता रखने वाली नारी के रूप में चित्रित किया है| शंकर कहता है कि जयंती अंदर से टूट गई है| तब स्पष्टतः जयंती बताती है कि उसके टूटने का कारण शंकर ही है| शंकर ने उसे प्रेम किया शादी करनी चाहिए पर ऐसा नहीं किया| शंकर कहता है कि उसे शंका थी कि उसके आवारापन देखकर जयंती उसे विवाह नहीं करेगी| तब शंकर से से जयंती कहती है कि शादी करते तो जीवन ही कुछ और होता जनवादी चेतना से संपन्न स्पष्टवादिता जयंती के चरित्र की एक विशेषता है| जयंती यह भी बताती है कि शंकर कठोर नहीं था दामोदर के साथ उसने जो व्यवहार किया वह उचित था| कई बार उसने जो सहायता की उस में उसके जीवन का अन्य रूप झलकता था|

जयंती के चरित्र में जिजीविषा दिखाई देती है| शंकर उसे सुखी बनाने हेतु अंडमान ले जाना चाहता है पर अपने आप को यही सुखी बनाने की ललक उसमें निहित है| वह कहती है कि मैं जिजीविषा के साथ रहना चाहती हूँ| रेखा चाहती है कि जयंती उसके साथ ही रहे रेखा की इस इच्छा को जयंती नहीं मानती, वह स्वयं अलग जीना चाहती हैं| शंकर आदि को टूटी हुई नहीं मानती उसकी जिजीविषा अनुकरणीय है| दुखों के आसन पर बैठकर भी व आनंद का गीत गाने का साहस रखती है| जयंती चाहती है कि उसकी पुत्री वीणा का जीवन आनंदमय हो दीपक और वीणा के विवाह में जाकर बीच में ही विवाह मंडप से निकल कर बाहर आ जाती है| वह सोचती है कि कहीं वहाँ उसकी मृत्यु हो जाने पर पुत्री का विवाह ना रुके| पुत्री को वह सदा सुखी देखना चाहती है| जनता का प्रत्येक सदस्य चाहता है कि उसकी संतान का जीवन आनंद का उद्यान बने उसकी यह आकांक्षा जनवादी चेतना से संबंधित है| इस तरह वर्मा जी जयंती को उच्च गुणों के साथ-साथ माननीय दुर्बलता के प्रतीक के रूप में चित्रित किया है|

रेखा:

रेखा लक्ष्मीकांत वर्मा के चर्चित उपन्यास "तीसरा प्रसंग" का मुख्य पात्र है| रेखा दामोदर की पत्नी है उसका प्रेम सच्चा है| 25 बरस की होने पर भी 50 के दामोदर से शादी की है| वह संतान चाहती है| उसकी मान्यता है कि संतान के बिना स्त्री- पुरुष का जीवन व्यर्थ है| सामाजिक मान्यता और जीवन की समग्रता के लिए विवाह को अनिवार्य बताती है|रिश्ते के संबंध में रेखा बताती है कि रिश्ते रिश्ते हैं| जयंती इसलिए दुखी है कि रिश्ते को वह जीवन मूल्य मानती है| दामोदर और जयंती के संबंध को जानते हुए भी रेखा जयंती की सेवा करती है| एक दिन शंकर दामोदर के यहां आता है शंकर चाहता है कि जयंती अब रेखा के यहां रहे रेखा भी मान जाती है| सबको आश्चर्य होता है कि जयंती का वृतांत जानकर भी रेखा उसके प्रति क्रोधित नहीं होती| वस्तुतः रेखा चाहती है कि जयंती उसके घर पर ही रहे, पर जयंती नहीं मानती| जयंती जिजीविषा के साथ अलग जीना चाहती है| रेखा कहती है कि वीणा तथा दीपक को भी यहां बुला ले| सब मिलजुल कर रहे तो समस्याएं हल हो जाएंगी| दामोदर नहीं मानता तो सुरेखा समझाती है| दामोदर देखता है कि रेखा में बहुत परिवर्तन आ गया है| उसके सहृदयता देखकर शंकर एवं दामोदर दोनों चकित हो जाते हैं| जयंती कहती है कि वीणा आदि आ जाए तो उस अपार आनंद को सह नहीं पाएगी| जयंती सोचती है कि रेखा इतनी सहिष्णु कैसे बन गई है?

रेखा अब पूरा विश्व बंधुत्व भावनाओं को अपना लेती है| किसी से द्वेष नहीं करती| दामोदर इस बात पर चकित है कि जयंती का पूर्ण वृतांत जानते हुए भी रेखा उसके प्रति कभी क्रोधित नहीं होती| जयंती की

सेवा- सुश्रुषा करने में आनंद का अनुभव करती है| पहले दामोदर से कपड़े, चाय आदि मांग लेती थी पर अब स्वयं वही सभी कार्य कर लेती है| दामोदर रेखा के चरित्र में संपूर्ण परिवर्तन पर चकित है| दामोदर कहता है कि पिता शब्द का स्मरण दिलाकर रेखा उसमें परिवर्तन लाना चाहती है| यह जानकर भी वीणा दामोदर की पुत्री है, रेखा न दुखी होती है और ना क्रोधित होती है|'रेखा' को वर्मा जी ने जीवन मूल्यों पर विश्वास रखनेवाली तथा निस्वार्थ प्रेम-भावना का प्रतीक के रूप में चित्रित किया है|

सरला :

सरला श्री लक्ष्मीकांत वर्मा के द्वारा लिखित श्रेष्ठ उपन्यास "तीसरा प्रसंग" का एक मुख्य पात्र है| सरला एक अत्यंत उत्तरदायित्व नारी है| उसके चरित्र में सक्षम पारिवारिक चेतना निहित है| अपनी बहन बसंती का विवाह अमेरिका में कार्यरत इंजीनियर गणपति चौधरी से निश्चित करती है| वह विधवा है पर अपने पुत्र दीपक के लिए सब कुछ करती है| किराए के पैसे से जीवन व्यतीत करती है| इसके अतिरिक्त उसके दिवंगत वकील पति से भी उसे काफी संपत्ति मिली थी| किरायेदारों को कभी भी किराए के लिए नहीं सताती है| वासंती, अपनी शादी से पहले दीपक वह वीना का विवाह करवाना चाहती है इस संबंध में सरला के पास वासंती स्वयं जाती है इस संबंध को यह कहकर ठुकरा देती है कि वीणा अपने पिता 'केवल' की नहीं बल्कि दामोदर की अपनी पुत्री है| दामोदर को लिखित जयंती के पत्र से उसे विषय ज्ञात हुआ था| सरला का हृदय बदल जाता है| उसकी मानवीय प्रवृत्ति जागृत होती है| वह सोचती है कि माता की गलती के कारण पुत्री को सजा क्यों दें? दीपक और वीणा के विवाह के लिए सरला मान जाती है| उसके हृदय की यह विशेषता एक उज्जवल प्रवृत्ति है|

मनोरमा:

मनोरमा श्री लक्ष्मी कांत वर्मा के द्वारा लिखित एक वृहद राजनीतिक एवं ऐतिहासिक उपन्यास मुंशी रायजादा का मुख्य पात्र है| मनोरमा की चरित्र में जनवादी चेतना का प्रांजल प्रस्फुटन हुआ है| वह चाहती है कि रायजादा वंश में अनादिकाल से चली आती जनवादी रीति- नीति का पालन पोषण हो| पर अंग्रेजों के युग में इसके लिए मौका नहीं है| अपने वचन के अनुसार आयुक्त अभयाचरण उनका आतिथ्य स्वीकार करने नहीं आते| जनता के चित्त- रुचि के अनुसार बंधु बंधुओं को आना आचार है, पर ऐसा नहीं होता मनोरमा अपने पड़ोसियों से पहले ही कह देती है कि उनके यहां आयुक्त अभयाचरण आएगा| जब ऐसा नहीं होता वह उनके कोमल मन को ठेस पहुंचाती है| साहस के साथ बर्दाश्त करती है एक बार थापन देवन की पूजा में वह जा नहीं सकती क्योंकि वह अचेतन अवस्था में है फिर भी वह चाहती है जनता के नियम के अनुसार तापन देव की पूजा हो जिसे अंग्रेजी सरकार लावारिस बनकर अपने आधीन में ना ले ले |इस प्रकार हम देख सकते हैं कि माननीय मात्र के मन की इच्छा, आकांक्षा, देश प्रेम तथा कर्तव्य परायणता आदि उत्तम गुणों से उनका चरित्र भरा हुआ है|

दिव्या :

'दिव्या'(दिव्या देवी) वर्मा जी के प्रमुख उपन्यास "एक खाली कुर्सी की आत्मा" का श्रेष्ट पात्र है| दिव्या एक श्रेष्ट गायिका है| संगीत उसके जीवन का अभिन्न हिस्सा है| उसका पति जीवन को अधिक महत्व नहीं देता| शरीर को वह मांसपेशियों की राशि मात्र मानता है ; जबकि दिव्या जीवन को पारिजात पुष्प मानती है| उसकी जीवन-दृष्टि अत्यंत महत्वपूर्ण है| जीवन को वह स्थूल नहीं बल्कि सूक्ष्म समझती है| जीवन संबंधी विचारों में मतभेद होने पर भी दोनों का प्रेम कम नहीं होता|

दिव्या की चरित्र में श्रमशीलता दिखाई देती है| वह संगीत की उपासना में सदा लीन रहती है| संगीतज्ञों की भी वह सेवा करती है| कालांतर में संपत्ति का दान करके मिट्टी की मूर्तियाँ बनाती है| उसके अनुसार जीवन धन नहीं है, जीने केलिए धन की आवश्यकता है| दिव्या सेवा की प्रतिमूर्ति है| उसका मानना है कि वास्तविक संतोष सेवा से ही प्राप्त होता है| दिव्या में अधिकार की कामना नहीं है| दिव्या समझती है कि अधिकार की कमाना व्यर्थ है| अधिकार मनुष्य को दुखी बनाता है|

निष्कर्ष:

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि नारी के चरित्र का निर्माण प्रत्येक समाज की संस्कृति,वहाँ की आर्थिक-सामजिक वास्तविकताओं,जनमानस की चेतना,जागरूकता एवं सूझबूझ पर निर्भर करता है| लक्ष्मीकांत वर्मा के उपान्यासों में दीप्ति,वीणा, दिव्या, जयंती,रेखा,सरला और मनोरमा का चरित्र उपर्युक्त बात की पुष्टि देती है | "जो पुरुष,अपनी पत्नी को प्रसन्न नहीं रखता, उसका पूरा परिवार ही अप्रसन्न और शोकग्रस्त रहता है| यदि स्त्री प्रसन्न है तो सारा परिवार कुशल रहता है|"- मनुस्मृति ३.६२

सन्दर्भ ग्रन्थ:

१) नारी जीवन: आदर्श एवं उत्कर्ष - डॉ. प्रमोद पाण्डेय

२)आधुनक हिंदी उपन्यासों में नारी के विविध रूपों का चित्रण - डॉ. मुहम्मद अज़हर ढ़ेरीवाला

३) हिंदी उपन्यासों में नारी - बिबडू अगरवाल

४) एक कटी हुई ज़िन्दगी एक कटा हुआ कागज़ - लक्ष्मीकांत वर्मा

५) तीसरा प्रसंग - लक्ष्मीकांत वर्मा

६) एक खाली कुर्सी की आत्मा - लक्ष्मीकांत वर्मा

७) मुंशी रायज़ादा - लक्ष्मीकांत वर्मा

***